International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 70-74

डॉ. विष्णु विराट के स्फुट काव्य–भाव एवं शिल्पगत–अनुशीलन

नित्य नूतन पाराशर
किशोरी रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावनाः गीतिकाव्य–परिभाषा और स्वरूप

सामान्यतः गीत उस पद रचना को कहते हैं जो गाई जा सके। गीत–काव्य में तर्क और बौद्धिकता के लिए कोई स्थान नहीं होता। डॉ. रवीन्द्र भ्रमर के तर्क ओर बौद्धिकता के लिए कोई स्थान नहीं होता। डॉ. रवीन्द्र कुमार भ्रमर के अनुसार– ''गीतिकाव्य बौद्धिकता का भार वहन नहीं कर सकता। बुद्धि अथवा विवेक का सामान्य व्यापार, तर्क और नैतिकता के आग्र को लेकर चलता है। गीति की भावना प्रधान–रचना–सृष्टि इन आग्रहों के अनुकूल नहीं पड़ती।'' गीति काव्य के लिए संगीत तत्व को अनिवार्य माना गया है। यह तत्व जब जन–मानस से जुड़ने का प्रयास करता है तब वह शब्द संगीत अधिक होता है अर्थ संगीत कम। डॉ0 विमल कुमार के अनुसार– ''शब्द संगीत अपनी मूर्तता के कारण प्रायः साधारण कोटि का किन्तु सर्वग्राहय होता है जबकि अर्थ संगीत अधिक मार्मिक होता है।''

गीत केवल शब्दों की बुनावट विशेष का नाम नहीं है, उसकी इस बुनावट में केन्द्रभूत भाव की उपस्थिति भी अनिवार्य है। हिन्दी–साहित्य कोष के अनुसार– ''गीत शब्द 'लिखि' के पूर्वरूप और अब उसके भेद के लिए अधिक उपयुक्त है क्योंकि उसका यही अर्थ हमारी भाषाओं में प्राचीन काल से चला आ रहा है। 'लिख' का एक बाह्य लक्षण उसकी पूर्वापर–प्रसंग–निरपेक्षता अवश्य है और इस कारण वह मुक्तक के अन्तर्गत आ जाता है। किन्तु उसकी प्रकृति और रूप रचना दोनों 'लिखि' से भिन्न है। अतः उसे मुक्तक के रूप में मानना उसकी महत्ता को घटाना है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर गीति–काव्य के निम्न लक्षण बताये जा सकते हैंः–

1. प्रसंग –निपेक्षता
2. पूर्णता
3. भाव–प्रवणता
4. स्थायी (ध्रुवपद) पर कड़ियों का आधारित होना
5. भाव का धरातल वैयक्तिक होना
6. गेयता

गीतिकाव्य किसी कथानक का मुखापेक्षी भी नहीं होता है। उसका लक्ष्य भाव विद्वोष को काव्यानुभूति के उच्च शिखर पर स्थापित करता है। बस निष्पत्ति में जो तत्व अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं वे गीत में सक्रिय रहते हैं। डॉ. अशोक 'अश्क' इसी कारण कहते हैं– ''गीत हृदय का स्निग्धतम् नवनीत है। काव्य रचना की परीक्षा है।'' जैसे सौर्य मण्डल का प्रत्येक ग्रह सूर्य की परिक्रमा करता है। इसी प्रकार गीत का हर चरण स्थायी (ध्रुवपद का टेक) से सम्बन्ध रखकर उसी को लक्ष्य में रखकर अपने अस्तित्व को आधार देता है। पर इसका आशय यह नहीं कि उसमें सामाजिकता के तत्व नहीं होते। वैयक्तिकता संवेदना के घनत्व और उसकी तीव्रता को बढ़ाती है। गीत में संगीत और गेयता दोनों तत्व होते हैं। किन्तु किसी गीत में कोई एक तत्व प्रधान होता है और तो किसी में कोई तत्व। गीत ने सामाजिक परिवर्तनों को झेलते हुए भी अपने ''भाव केन्द्रित स्वभाव की रक्षा की है। गीत विविध रूप धारण करके भी अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखता है।

गीति और गीत में आज भ्रमात्मक स्थिति है। वास्तव में गीति गीति का उसी तरह घटक या अंग है जिस प्रकार अनुगीत या नवगीत है। गीत भीतर से उभरता है जो केवल श्रौताओं के लिए नही होते, अपने लिए भी होते हैं। हल जोतता एकाकी किसान, राह चलता एकाकी व्यक्ति गीत गुनगुनाते चलता है। उसे श्रोता की आवश्यकता नहीं। संगीत गीत का अभिन्न अंग है किन्तु जब वाद्यों का संगीत प्रमुख हो जाता है तो गीत का नाद सौन्दर्य दब जाता है। गीत में सघनता सक्षिप्तता तथा छन्द का बन्धन किसी न किसी रूप में रहता है, इसलिए उसकी मूल प्रवृत्ति माधुर्यपरक एवं प्रसादात्मक है शालीनता गीत का श्रृंगार है। डॉ. जयेन्द्र स्नातक के अनुसार– ''किसी विशेष विचारधारा से प्रतिबद्ध न होकर तरंगायित मन के भावोच्छवास से आपूर्ण इन कविताओं में एक ऐसी सुरूचिपूर्ण सुरभि है जो काव्य रस के पारखी के लिए आनन्द प्रदायिनी बनती है।''

उक्त विवेचना के आधार पर गीतिकाव्य की तीन प्रमुख विशेषताएँ सामने आती हैं। अपने मन की अनुभूति, काव्यात्मकता और गेयत्व। इन्हीं को विस्तार देकर अनेक लक्षणों के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। अत्यानुभूति की तीव्रता ही कवि को गाने के लिए प्रेरित करते हैं। इन तत्वों का समावेश करते हुए गीति की निम्न परिभाषा दी जा सकती है– ''कविता की मुख्य प्रेरणा आत्मानुभूति जब मधुर शब्दों द्वारा स्वाभावित गीतिमय और गेय स्वर लहरियों में तीव्रता के साथ प्रकट होती है, वब वह गीत–अथवा गीति कहलाती है।''

गीत में भावपूर्ण अभिव्यक्ति, अन्तःजगत का चित्रण, भावना की सुन्दरता और व्यजकता, मधुर शब्द चयन, भाव और भाषा का सामंजस्य, साक्षात् प्रभाव और संक्षिप्तता होनी आवश्यक है। यही गीत के प्रमुख लक्षण हैं।

हिन्दी गीति काव्य–परम्परा

भारतीय साहित्य में गीतिकाव्य की परम्परा का सूत्रपात–वैदिक–काल से ही माना जाता रहा है। संस्कृत में जयदेव का 'गीतगोविंद, कालिदास का 'मालविकाग्निमित्र, मेघदूत, विल्हण की चौर पंचायिका, पीड़ित राज जगन्नाथ की गंगालहरी में गीतकाव्य के तत्व न्यूनाधिक मात्रा में उपलब्ध हैं।

हिन्दी साहित्य में गीति–काव्य की परम्परा का सूत्रपात मैथिल कोकिल 'विद्यापति' के गीतों से माना जाता है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार 'विद्यापति के पद हिन्दी साहित्य में पथबद्ध मुक्तक गीत काव्य के पथ–प्रदर्शक हैं और सूर आदि कृष्ण भक्त–कवि छन्द, शैली और संगीत के विचार से विद्यापति के आभारी हैं।'' विद्यापति के उपरान्त कृष्ण भक्त–कवियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। सगुण धारा के इन कवियों के गीतों में भाव–विछ्वलता की प्रमुखता है। सूरदास–मीराबाई आदि कृष्ण–भक्त कवियों ने

उत्कृष्ट गीतों की रचना की है। ''कृष्ण गीतावली'' में राग–गौरी में रचित निम्न पद तुलसी की संगीतात्मक प्रतिभा का परिचायक है।

''छोड़ो मेरे ललन ललित लरिकाई।
ऐहैं सुत देखुवार कालि तेरे सबै ब्याह की बात चलाई?''

तुलसी की गीतावली तथा विनय पत्रिका में भी गीतिकाव्य के तत्व मिलते हैं। रीतिकाल में गीति तत्व का समावेश नहीं हो सका किन्तु आधुनिक काल के प्रथम चरण से ही 'लोकगीत शैली' शैली में रचना करने वाले अनेक कवि मिलते हैं यथा– भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' और पं. प्रताप नारायण मिश्र। श्रीधर पाठक के भी लोकगीत शैली में प्रकृति–चित्रण और देशभक्ति से संबंधित गीत लिखे। भारतेन्दु जी के गीतों में देश की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण हुआ। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार–
भारतेंदु जी अपनी अनेक रचनाओं में जहाँ प्राचीन काव्य प्रवृत्तियों के अनुवर्ती रहे वही अपने गीतों में देश प्रेम को स्थान देकर उन्होंने गीति काव्य की नूतन धारा का सूत्रपात किया जिससे आगे चलकर छायावादी युग में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि ने गति प्रदान की।''
द्विवेदी–युग में काव्यभाषा के पद पर खड़ी बोली प्रतिष्ठित हुई तथा नूतन छन्दों के प्रयाग पर बल दिया। रवीन्द्र के आध्यात्मिक रहस्यवाद को ग्रहण करते हुए मैथिलीशरण गुप्त, मुकुट धर पाण्डेय ने उत्कृष्ट गीतों की रचना की। साकेत के 'नवम सर्ग' में गीतों की भरमार है। गीतिकाव्य के विकास का चरमोत्कर्ष छायावाद एवं स्वच्छतादाद में हुआ। सुमित्रा नंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महोवदी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, माखनलाल चतुर्वेदी, नरेन्द्र शर्मा, बालकृष्ण शर्मा, रवीन ने ऐसे गीत लिखे जो प्रसिद्धि के खिर पर पहुँचे।
प्रसाद रचित 'बीती विभावरी जागरी' पंत का गीत लाई हूँ फूलों का हार लोगी मोल लोगी मोल' निराला का 'जागो फिर बार, महादेवी का मैं नीर भरी दुःख की बदली'' अत्यन्त प्रसिद्ध हुए।
हिन्दी साहित्य कोश में गीत और प्रगति में कोई अन्तर नहीं माना गया है। इसी कोश के अनुसार, हिन्दी में गीति काव्य कशब्द रूढ़ हो चला, यद्यि अब भी कुछ लोग इसके लिए गीत काव्य प्रणीत मुक्तक और प्रगीत–काव्य शब्दों का भी व्यवहार करते हैं। प्रगीत भी गीति की तरह नवनिर्मित शब्द है परन्तु उसकी अपेक्षा 'गीति शब्द में अधिक सुकुमारता जान पड़ती है।''
अधिकांश विद्वान गीत और प्रगीत में अन्तर नहीं मानते किन्तु डॉ. आशा किशोर के अनुसार– ''गीत शब्द अंग्रेजीके 'सांग' तथा प्रगीत शब्द 'लिरिक' का समानार्थी है। दोनों में संगीतात्मकता होती है। परन्तु गीत काव्य का संगीत शास्त्रीयता पर आधारित होता है। यह लयात्मकता शब्द योजना से ही उत्पन्न होती है तथा इसे वाद्यों के किबना ही आन्तरिक संगीत फूटता है।'' निराला ने अपनी 'गीतिका' के प्रथम गीत में नवगीत की विशेषताओं का दिशा–निर्देश ही कर दिया–

''नवगीत नवालय, ताल, छन्द नव
नवल कण्ठ, नवजलद मन्द्रख
नवनभ के नव विहग–वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।''

शंभूनाथ सिंह के सम्पादन में तीन 'नवगीत दशक' प्रकाशित हुए। नवगीतकार देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' का मानना है कि लोक–संस्कृति, लोक–मानस लोक–भाषा लोक–लय और लोक–मुहावरों और उनसे जुड़ी माटी की सोंधी गन्ध मेरी दृष्टि में नवगीत के जीवन–संवाहक उपजीव्य है तथापि लोकगीत और नवगीत के मध्य कहीं व्यावर्तक रेखाकंन तो करना ही होगा।
छायावाद के उपरान्त गीत का स्वरूप बदला है। छायावादी गीतों का विषय मुख्यतः प्रकृति, प्रेम, सौंन्दर्य, नारी, लोक–चेतना, सांस्कृतिक–मूल्य आदि रहे हैं। पंत जी ने गांधी को कृष्ण के रूप में चित्रित करते हुए –

''साम्राज्यवाद का कंस
वन्दिनी मानवता पशु बलाक्रान्त
जन शोषण की बहती यमुना
तुमने की नतपद प्रणत शान्त।''

प्रगतिवादी गीतकारों ने शोषण का विरोध करते हुए शोषित–पीड़ित व्यथित व्यक्तियों की पीड़ा को उभारने का प्रयास अपने गीतों में किया। आज नवगीत का अस्तित्व सर्वत्र व्याप्त है। जिसकी प्रतिष्ठा सत्तर के दशक में हुई। 1967 में 'पांच जोड़ बांसुरी'' में जिन 40 गीतकारों के गीत हैं। उनमें पहला नाम निराला का ही है निराला की जो तीन रचनाएं इस कृति में संकलित हैं वे नवगीत के बहुत निराला है।

यथाः आज मन पावन हुआ है, जेठ में सावन हुआ है
अभी तब दृग वन्द थे ये, खुले उर के छन्द थे ये
सजल होकर बन्द थे ये, राम अहिरावण हुआ है
आज मन पावन हुआ है।

सन् 1970 से 1980 के बीच प्रकाशित कुछ अन्य गीत–संकलन है–

1. कोहरे के पांव 1971, विद्यासागर वर्मा
2. गीत यात्रा 1973, तारादत्त निर्विरोध
3. हरापन नहीं टूटेगा 1974, रमेश रंजक
4. दर्द कैसे चुप रहे 1976 चन्द्रसेन विराट
5. कुहरे की प्रत्यंचा 1979, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'
6. वन्द न करना द्वार 1979, रमानाथ अवस्थी
7. बंशी और मादल 1979, ठाकुर प्रसाद अवस्थी

1980–90 के बीच की नवगीतों के अनेक संकलन प्रकाशित हुए जिनमें प्रमुख हैं

1. लौट आएंगे सुमुन पक्षी 1980, अनूप मशेष
2. गंधवाण 1981, नरेन्द्र चंचल
3. धरती गीताम्बरा 1982, वीरेन्द्र मिश्र
4. बौराया मन 1984, प्रभा ठाकुर
5. रंग रति 1986, सुनीता जैन
6. काँपती बाँसुरी 1987, वीरेन्द्र मिश्र
7. कल्पवृक्ष गमले में 1990, असीम शुक्ल

1990 के उपरान्त भी नरेन्द्र, वीरेन्द्र मिश्र, कैलाश नाथ तिवारी, इन्द्रिरा मोहन, रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के नवगीत–संकलन प्रकाशित हुए।
शम्भूनाथ सिंह नवगीत दशक 1, 2, 3 का संपादन कर गीत विधा को स्थापित करने में विशेष योगदान दिया। उनके अनुसार– ''नई कविता की किलेवन्दी में नवगीत की भी हिस्सतेदारी रही है। निःसंकोच रूप से यह दावा किया जा सकता है कि सम्प्रति नवगीत ही समसामायिक हिन्दी कविता की मुख्य धारा है।''
'नवगीत अर्द्धशती' में डॉ. शम्भूनाथ सिंह ने नवगीत का आरंभ निराला से मानकर 1986 तक के काल–खण्ड के अर्द्धशती माना जाता है। इस प्रकार हिन्दी गीत का परम्परा का समृद्ध इतिहास रहा है।

डॉ0 विष्णु विराट का नवगीत–साहित्य में स्थान

जन्म एवं शिक्षा दीक्षा

डॉ0 विष्णु विराट का जन्म 1 जुलाई 1946 को उत्तर–प्रदेश के श्री कृष्ण जन्म मथुरा में हुआ। इनकी शिक्षा–दीक्षा मथुरा में ही सम्पन्न हुई है। प्रारंभिक शिक्षा श्री गणेश स्कूल तथा जवाहर स्कूल मथुरा में हुई। तत्पश्चात् इन्हें संस्कृत भाषा की शिक्षा लेने हेतु चतुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश दिलाया। इंटर की परीक्षा चम्पा अग्रवाल इंटर कॉलेज तथा बी.ए. परीक्षा के. आर. कालेज से पास की। एम.ए. (हिन्दी) आई.ओ.पी. वृंदावन से उत्तीर्ण की।

तदुपरान्त उच्चतर शिक्षा हेतु आपके काकाजी श्री गिरिधर लाल आपको अपने साथ बडौदा ले गए और बडौदा के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. दयाशंकर शुक्ल के निर्देशन में आपने ''गोस्वामी श्री हरिराय जी और उनका ब्रजभाषा साहित्य'' विषय पर शोध–प्रबंध लिखकर पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त की।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

डॉ. विष्णु विराट के पिता का नाम श्री बैजनाथ चतुर्वेदी जो द्वारिकाधीश मंदिर के मुख्याधिकारी थे, इसलिए इन्हें 'अधिकारी जी' के नाम से भी जाना जाता था। इनकी माता का नाम श्रीमती कमला था।

विराट जी के पितामह ज्योतिषी पं. गोपाल जी जंगीराम थे जो ज्योतिष के प्रकाण्ड पण्डित थे। विराट की पितामही का नाम श्रीमती गंगादेवी था जिनके नाम पर विराट का पुश्तैनी आवास 'गंगा भवन' नाम से मथुरा के सतीघाट पर है।

विराट जी के पिता के चार भाई थे। पिताजी सबसे बड़े शेष तीन चाचा के नाम– श्री गिरधर लाल, श्री शंकर लाल और श्री कन्हैयालाल जी। विराट के बड़े भाई श्री जनार्दन प्रसाद यू.के. बैंक के प्रबंधक पद से सेवा निवृत हो चुके हैं। आपकी चार बहनें हैं –गुलाब, केबड़ा किरन तथा शशि।

विराट जी की धर्मपत्नी श्रीमती ब्रजबाला है जो एक विदुषी महिला है। जो साहित्य संसार से जुड़ी है। आपके पुत्र का नाम नीरज मौर पुत्रवधु का रतिश्री है। अत्रि और अन्वेषा आपके पौत्र–पौत्री हैं। समाज में विराट जी का परिवार अभिजात, सुशिक्षित सौम्य एवं प्रतिशिश्रित एवं प्रतिष्ठित माना जाता है।

कृतित्व–

विराट जी का कृतित्व बहुआयामी है। ब्रजभाषा के साथ–साथ आपने खड़ी बोली को भी सशक्त लेखनी से समृद्ध किया है। कवि, कथाकार, निबंधकार, आलोचक, सम्पादक के रूप में आपने हिन्दी की सेवा की है वह अविस्मरणीय है। आपके कुछ प्रमुख ग्रंथों की सूची निम्नवत् हैः–

1.	**गोस्वामी हरिराय जी–ब्रजभाषा साहित्य**	**जवाहर पुस्तकालय, मथुरा**	**1974**
2.	बंद कमरे की धूप (उपन्यास)	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा	1978
3.	महर्षि अरविन्द (काव्यसंग्रह)	भाषा–भवन, मथुरा	1989
4.	भगवान श्री कृष्ण (काव्य संग्रह)	भाषा–भवन, मथुरा	1990
5.	हिन्दी राजभाषा व्याकरण	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा	1999
6.	निवर्सना (खण्डकाव्य)	गुजराज हिन्दी प्रचारिणी सभा (बडौदा)	2000
7.	लीला चीर हरण की	गुजराज हिन्दी प्रचारिणी सभा (बडौदा)	2000
8.	गीत–नवगीत	प्रकाशनाधीन	....
9.	चरागों से उठ रहा है धुआँ	प्रकाशनाधीन	....
10.	हाथ से छूटे कबूतर	गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा	2003
11.	समय साक्ष्य है	जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2005
12.	छन्द राग	गुजराती हिन्दी प्रचारिणी सभा, बडौदा	2006
13.	बांसुरी कैसे बजाना छोड़ दें	प्रकाशनाधीन	....

इनके अतिरिक्त इनके मथुरा से अनेक बाल उपन्यास प्रकाशित हुये जिनमें कुछ प्रमुख उपन्यास निम्न हैं–

ठगिनी बुढ़िया, अंतरिक्ष के लुटेरे, बौना जादूगर, आदमखोर राजमाता का अपहरण, जादूगर ठग, रानी रूपमती, उल्टी गंगा, हिम मानव, बन्टी बाजूस, जंगल का राज, जहरीले सांप, खतरनाक सफर, मुकाबला, हवाई दुर्घटना, हनुमान की मूर्ति, खूनी खंजर, जहरीले मानव आदि।

उपन्यास के अलावा कुछ आलेख निबंध निम्नलिखित हैं–

1. गोस्वामी श्री हरिराय जी ब्रह्म संबंध, नाथद्वारा 1974
2. भक्ति मंदाकिनी मीरा कलाकेन्द्र, उदयपुर 1978
3. ब्रजभाषा–आधुनिक संदर्भ मंगलदीप, बम्बई 1979
4. फिर वहीं बात शिलापंख, अगलीगढ़ 1985
5. सम्पादकीय भव्य–भारतीय, बडौदा 1987
6. सभा के मंच से युगल किशोर चतुर्वेदी 1988
7. शिक्षक की जबावदेही साहित्य परिचय, आगरा 1988
8. शिक्षक–एक व्यक्तित्व शिक्षक संसार, मथुरा 1989
9. शिवरात्री माथुर हितैषी 1989
10. कविवर बिहारी लाल माथुर हितैषी 1989
11. ब्रज की गलियां रामनारायण अभिनंदन ग्रंथ 1996
12. आत्महत्या मंगलदीप 1996
13. नवगीत विधा कृतसंकल्प, बडौदा 1998
14. पूर्वजों की परम्परा बल्लभीय सुधा, सुरत 1999
15. तरूण का गीतकाव्य गीतात्या कवि तरुण, दिल्ल 2000
16. पुष्टिमार्ग को हिन्दी साहित्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन 2000 की देन नाथद्वारा सम्मेलन उपन्यास, आलेख–निबंध के अलावा कुछ प्रमुख ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–
    1. बहते किनारे डॉ. के. एम. शाह,बडौदा
    2. खुला आकाश डॉ. नवीन प्रकाश सिंह, बडौदा
    3. हिन्दी के आख्यान खण्डकाव्य डॉ. ओ. पी. यादव, बडौदा
    4. गुजरात में हिन्दी प्रचारिणी की भूमिका डॉ. ओ. पी यादव, बडौदा
    5. गोविन्द सागर कविरत्न गोविन्द जी, मथुरा

नवगीत–साहित्य में डॉ. विष्णु विराट का मूलभूत स्थान

नवगीत के प्रमुख हस्ताक्षरों में डॉ. विष्णु विराट का भी स्थान है। सशक्त गीतकार डॉ. शम्भूनाथ सिंह हिन्दी नवगीतकारों में प्रमुख स्थान के अधिकारी हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– रूपरश्मि, छायालोक, मन्वन्तर, उदयांचल, दिवालोक, समय की शिलापर, खण्डित सत्य। देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' आठवे दशक के सशक्त गीतकार हैं। उनकी रचनाएँ हैं – 'पथरीली शोर में, पंख कटी महरावें, कुहरे की प्रत्यंचा और कालजयी नवगीत दशक–1 में तथा यात्रा के साथ–साथ में भी उनके गीत संकलित हैं।

तीन दशकों से भी अधिक समय तक गीत के रूप में पहचान बनाने वाले वीरेन्द्र मिश्र ने 'अवराम चल मधुवती, लेखनी बेला, गीतम नायक, गीत–संग्रहों में अपने गीत संकलित किये।

धरती–गीतम्बरा', झुलसा है छायानट धूप में तथा शांति गंधर्व भी इनके गीत संकलन हैं। पत्र–पत्रिकाओं में भी इनके गीत प्रकाशित होते रहे हैं।
उमांशकर तिवारी के गीतों को नवगीत दशक–2 में स्थान मिला है। इसके अतिरिक्त नवगीत अर्द्धशती में आपके गीत संकलित हैं। युगीन त्रासदी को वे सहज सपाट रूप में इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं–

दूर दरबाजों पर बिखर गयी राख
जलता है सिगरेट की आग से शहर
सभी ओर चीख और शोर
इन्सानी दर्द सभी ओर
दशहत का अन्धा दानव
लील रहा है सभी ओर छोटे
कुत्ते से भाग रहे पागल इंसान
हर घर है बना हुआ एक मौत घर

नवगीत विद्या के कुछ अन्य सशक्त कवि हैं– ओम प्रभाकर, सुधांशु उपाध्याय, गुलाब सिंह एवं जहीर कुरैशी। इनके प्रमुख संकलन इस प्रकार हैं–
पुष्प चरित (ओम प्रभाकर), कविता 64 (सं. ओम प्रभाकर), शब्द (ओम प्रभाकर) लेखनी की धूप, एक टुकड़ा, धूप, रंगित (जहीर कुरैशी) नवगीत के आकश के आकाश में इन्हीं सितारों के मध्य डॉ. विष्णु विराट भी देदीप्यमान हो रहे हैं। उन्होंने आठवें दशक से नवगीत लिखना प्रारंभ किया। उनके अब तक तो नवगीत संग्रह सामने आये हैं उनका विवरण इस प्रकार है–

1. धूमवन से लौट आई लाल परियाँ
2. हाथ से छूटे कबूतर
3. अक्षरों के वंश घायल हैं
4. चीडवन में चहचहाती एक चिड़िया
5. बाँसुरी कैसे बजाना छोड़ दें

1. धूम्रवन से लौट आई लाल परियाँ
विष्णु विराट का 2003 में गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा बडौदा से प्रकाशित नवगीत संग्रह है जिसमें 76 गीत संकलित हैं। इसके प्रथम गीत के आधार पर ही 'संकलन' का नामकरण किया गया है–

''कुछ थकित कुछ चकित सी
कुछ व्यथित–सी
धूम्रवन से लौट आई लाल परियाँ।''

इस संग्रह के अधिकांश गीतों वर्तमान स्थितियों पर तीखी व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है। तथाकथित प्रजातन्त्र की विद्रूपताओं का तथा शोषण की शक्तियों का आंकलन इन गीतों में सर्वाधिक देखा जा सकता है। मिथकों के प्रयोग से वर्तमान परिवेश को रूपासियत किया गया है।

''हार गया अर्जुन इस बार
दुश्शासन मीन बेधता है
पांचाली नग्न है स्वयं
अंध धृतराष्ट्र देखता है
जरासंघ मल्लयुद्ध जीत गया
हार गई भीम की जवानी।''

आज की अपसंस्कृति में ये प्रश्न कितने समीचीन हैं। एक अन्य गीत में कवि ने दमयन्ती को संबोधन मात्र देकर आज की राजनीतिक सामाजिक विद्रूपता एवं भ्रष्ट स्थितियों में मानवी रागात्मकता की त्रासदी को बड़ी ही सशक्त अभिव्यक्ति दी है–

''अशुभ है मुर्हत आज का, कल जाना दयमन्ती
चिड़ियों पर पहरे हैं गहरे उड़ने पर लाखों प्रतिबंध
चीर लुटेरों में मत फँस जाना, प्राणों की तुमको सौगन्ध''

2. हाथ से छूटे कबूतर
गीतकार विष्णु विराट का यह नवगीत संकलन जिसमें कुल मिलाकर 60 गीत हैं। रचनाकार अपनी कृतियों में समाज के दर्द को व्यक्त किया है–

''वे रहे खुश हम करें मातम
ज्योति उनकी और अपना तम
हम पहाड़ों से रहे हैं दब
कब तलक सहते रहे या रब
बात ये भी सोचने की है।''

विराट के संवेदन लोक में शोषण की वह नीली नदी है जो देखने में प्रवाहशील है किन्तु उनके मूल में सृजन का विध्वंस और समाज को जाति–धर्म के नाम पर बाँटने की प्रवृत्ति है–

''नीली आँख का पाकर इशारा
आँधियों ने फिर उजाड़ी बस्तियाँ
फिर किनारे बँधी डूबी कश्तियाँ।''1
''लोग अधनंगे करम को कोसते हैं
सोचते अवतार कोई आएगा
देवता कोई कृपा करके गगन से
रोटियों की थैलियाँ बरसाएगा।।2

कवि का मन पुनः अपने परिवेश लौटने को ललक रहा है पर जानता है कि वहाँ उसका सामना उस सच से होगा जिससे पलायन कर घर से भाग आया था–

''घर घुसने में डर लगता है
बूढ़ी अम्मा की बुझती आँखें दूखूंगा
घर भर की भूखी आँतें कैसे सहपाऊँ?
रूखे चेहरे बच्चों के कैसे मानेंगे
साँझ हो गई और कहाँ तक ठोकर खाऊँ?''

3. बाँसुरी कैसे बजाना छोड़ दें
विष्णु विराट का नवगीत संग्रह 'विष्णु विराट अभिनंदन ग्रंथ' गुजरात ब्रजभाषा साहित्य में प्रथम बार सन् 2006 में छपा है। इस नवगीत संग्रह में 46 गीत हैं।
कवि ने इस संकलन में प्रथम गीत में ही भव्य–विम्ब–योजना करतेह हुए स्वयं को ऐसी मछली माना है जो गमों के सागर में डूब रही है और मछेरे उसे जाल में फंसाने की चेष्टा कर रहे हैं।

''एक मछली हम
हमारे संधु से गम
और उस पर जाल डालते हैं मछेरे
क्या कहें हम।''

लोग ऊँचे उड़ने वाले परिंदों के पर कतरकर आकाश पर भी एकाधिकार करना चाहते हैं–

उन परिंदों के कतर दो पंख
जो ऊँचे उड़े हैं

ये हवा सारी हमारी है
गगन सारा हमारा है।''

विराट जी कुछ नवगीत भी प्रणय की भावना से ओतप्रोत हैं। प्रिय के बिना कवि को सब कुछ सूना–सूना लगता है।

गुलों में रंग आए हैं
दरख्तों में नए पत्ते,
फिजाएँ हैं मगर ऐसी नहीं हैं
हाँ तुम्हारे बिन..... तुम्हारे बिन।।

अभिमन्यु आज की युवा पीढ़ी को चुनौती देता हुआ कहता है–

अब तुम्हारा ब्यूह–भेदन हम करेंगे
अब हमारे हाथ में रथ चक्र आया
ऐ कृपा, ऐ द्रोण, ऐ बूढ़े पितामह
क्यों गलित अंधा चलन सन्माते हो?
दोष दुःशासन अकेले का नहीं है
सत्य अवमूल्यित हुआ, तुम जानते हो
सामने देती चुनौती युवा पीढ़ी
आपका आसन कहो क्यों डगमगाया।''

4. चीड़वन में चह चहाती एक चिड़िया

कवि विष्णु विराट का यह नवगीत संग्रह 2006 में गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा, बडौदा से प्रकाशित हुआ। जिसमें कुल 70 गीत संकलित हैं। यह नवगीत संग्रह जनवादी चिंतन से जुड़ा है। ''दिव्यरथ पर' नामक गीत में कवि ने वर्तमान नेताओं की पोल खोलने का सार्थक प्रयास किया है–

''दिव्य रथ पर चढ़ गए जो,
मंदिरों में मढ़ गए जो,
पत्थरों के देवता वे हो गए हैं।
लोग जय–जयकार करते
भेंट और उपहार धरते
हाथ जोड़कर सिर झुकाकर वंदन कर रहे हैं।''

कहीं पुलिस बलों की असलियत का पर्दाफाश करता उदाहरण प्रस्तुत किया है–

''आटे–वाटे दही चटाके
पटवारी ने कहा पटाके
खादी कपड़ा पल–पल लफड़ा
कानवाती फुस–फुस–फुस
तुमी खुश भई मैं भी खुश।''

मंदिर–मस्जिद के नाम पर जनता के मध्य दंगे करवाकर ठेकेदार मंगल करते हैं–

''तेरी मस्जिद, मेरा मंदिर
हो गया सौदा अन्दर–अन्दर
उनका दंगल, इनका दंगल
चिनगारी को मिल गया भुस
तुमी खुश भई में भी खुश।''

5. अक्षरों के वंश घायल हैं

प्रस्तुत नवगीत संग्रह सन् 2006 में गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा बडौदा से प्रकाशित है इसमें 34 गीत संकलित हैं। सुकुमार संवेदनाओं के प्रभामण्डल से आवृत ऐसा गीत है जो जीवन की अनुभूति को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है–

''जिदंगी एक राग है,
एक रंग भी है,
तीज है त्यौहार, उत्सव और मेला,
रास के रस से तुम्हें परहेज है क्यों?
जंगलों में भटकता है क्यों अकेला?
बाँसुरी तो बाँसुरी है तोडिए मत
गीत के अंव तंस घायल हो रहे हैं
शब्द भेदी बान मत मारो किले से
अक्षरों बंश घायल हो रहे हैं।''

माँ की गोद में उसे जो शांति मिलती है उसकी अभिव्यक्ति यहाँ प्रस्तुत की है–

''देह में जमने लगी
बहती नदी है
साँस लेने में लगी
पूरी सदी है।
चेतना पर धुंध छाई है
माँ तुम्हारी याद आई है
गोद में सिर रख जरा सो लूँ
फिर जनम भर रत–जगाई है।''

पर्यावरण सुरक्षा के प्रति कवि सेचत है प्रकृति से की गई छेड़–छाड़ ने किस प्रकार मौसम में बदलाव किए हैं। इसका कच्चा चिट्ठा यह निम्न गीत में खोलता है–

''खा गई सड़कें पहाड़ों को,
नई कॉलोनियों ने खेत खाए
इस नगरकी भूख ने जंगल चबा डाले।
अब न बादल घुमड़ते हैं
आँधियों में उड़ गई काली घटायें
अब न सावन भीगता है
अब छूती देह बरसती हवाएँ
पी रही धरती रसामन
साँप सूंघी विष भरी गुलजार फसलें।''

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहना उचित है कि विष्णु विराट के गीतों में रागात्मकता को जिंदा रखने की छटपटाहट है। वर्तमान स्थितियों पर तीखी व्यंग्यात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं, प्रजातंत्र की विद्रूपताएँ एवं शोषण का विरोध है। गीतों की भाषा मं कोमलता एवं सुकुमारता लाने के लिए कवि ने लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। इनकी अधिकांश रचनाएँ आत्मीय संवेदनाओं से ओत प्रोत हैं। इन्होंने अपेन गीतों प्रेम–भावना को भी स्थान दिया है। भाषा, भाव–भंगिमा, अभिव्यक्ति के तेवर सादृश्य–विधान एवं प्रतीक–योजना की दृष्टि से भी इनके गीत उच्चस्तरीय हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विष्णुविराट की – 1. तमसा के तट, 2. निर्वसना, 3. लीला चीर हरण की, 4. बन्द कमरे की धूप, 5. धूमवन से लौट आई लाल परियाँ, 6. हाथ से छूटे कबूतर
2. निराला कृत– राम की शक्ति पूजा
3. क्रान्तिकारी कवि– कबीर
4. समन्वयवादी– तुलसीदास